The Infinite
An International Peer Reviewed / Refereed Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2026
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.co.in

हिंदी साहित्य में महाकवि सूरदास का युगांतरकारी योगदान

स्वाती पाण्डेय : बी०ए०द्वितीय वर्ष,प्रो०राजेंद्र प्रसाद रज्जु भैया राज्य विश्वविद्यालय,प्रयागराज

ARTICLE DETAILS

Research Paper

बीज शब्द:
सूरदास, सूरसागर, पुष्टिमार्ग, अष्टछाप, वात्सल्य रस, भ्रमरगीत, ब्रजभाषा, सगुण भक्ति, हिंदी साहित्य का भक्तिकाल।

शोध-सार

मध्यकालीन हिंदी साहित्य का भक्तिकाल भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का 'स्वर्ण युग' (Golden Age) माना जाता है, जिसके केंद्र में महाकवि सूरदास (1478–1583 ई.) एक प्रदीप्त सूर्य के समान देदीप्यमान हैं। वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग के प्रधान स्तंभ तथा अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में सूरदास ने कृष्ण-काव्य परंपरा को जिस उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित किया, वह विश्व साहित्य में अद्वितीय है। प्रस्तुत शोध-पत्र हिंदी साहित्य में सूरदास के बहुआयामी अवदान का गहन समालोचनात्मक मूल्यांकन करता है। सूरदास ने वात्सल्य रस का कोना-कोना झाँककर उसे एक स्वतंत्र रस के गौरव तक पहुँचाया; श्रृंगार के संयोग और वियोग—दोनों पक्षों का सूक्ष्म, स्वाभाविक एवं मानवीय चित्रण किया; तथा 'भ्रमरगीत' के माध्यम से ज्ञान और योग के शुष्क अहंकार पर प्रेम, भक्ति एवं सहृदयता की विजय ध्वजा फहराई। इसके अतिरिक्त, जनबोली ब्रजभाषा को परिष्कृत, माधुर्यपूर्ण एवं शास्त्रीय संगीत की राग-रागिनियों से युक्त साहित्यिक भाषा में रूपांतरित करना सूरदास की युगान्तकारी भाषाई उपलब्धि है। प्रस्तुत शोध-पत्र सूर के काव्य-शिल्प, दार्शनिक चेतना, बाल-मनोविज्ञान और लोक-जीवन के चित्रण का विशद विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए सिद्ध करता है कि सूरदास का योगदान हिंदी साहित्य की अमर धरोहर है।

1. प्रस्तावना एवं ऐतिहासिक-साहित्यिक पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य के इतिहास में **1375** वि. सं. से **1700** वि. सं. तक का कालखंड 'भक्तिकाल' के नाम से अभिहित है। यह वह युग था जब उत्तर भारत में राजनीतिक उथल-पुथल, विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण और सामाजिक विषमताओं के कारण आम जनमानस घोर निराशा, अवसाद और आध्यात्मिक शून्यता से जूझ रहा था। ऐसे संक्रमण काल में दक्षिण भारत से प्रवाहित भक्ति की पावन धारा ('भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामानंद') ने उत्तर भारत के जन-जीवन को नवजीवन प्रदान किया। भक्तिकाल की सगुण कृष्ण-काव्य धारा के प्रवर्तक एवं शीर्ष पुरुष के रूप में महाकवि सूरदास का प्रादुर्भाव हिंदी साहित्य की युगांतरकारी घटना है।

सूरदास का जीवन-काल सामान्यतः संवत् **1535 (1478** ई.) से संवत् **1640 (1583** ई.) के मध्य माना जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित 'पुष्टिमार्ग' (अनुग्रह मार्ग) में दीक्षित होने के उपरांत सूरदास की काव्य-धारा दीनता और दैन्य-भाव से ऊपर उठकर सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव के अतुलनीय आनंद-सागर में विलीन हो गई। वल्लभाचार्य ने जब सूरदास के दैन्य भाव के पदों को सुना, तो उन्होंने ऐतिहासिक वाक्य कहा था: 'सूर ह्वै कै ऐसो घिघियात काहे कौ है? कछु भगवल्लीला-वर्णन करि!' इस दीक्षा ने सूरदास की अंतर्दृष्टि को उन्मीलित कर दिया और वे ब्रज के कण-कण में लीला-पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की बाल-लीला, गोचारण और रास-विलास के अमर गायक बन गए।

2. सूरदास का कृतित्व एवं रचना-संसार

महाकवि सूरदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या विद्वानों के अनुसार भिन्न-भिन्न मानी जाती है, किंतु प्रामाणिक शोध के आधार पर उनके तीन ग्रंथ सर्वमान्य एवं सुप्रसिद्ध हैं:

1. **सूरसागर (Sursagar)**: यह सूरदास का प्रधान, सर्वाधिक विशाल एवं कालजयी महाकाव्य-तुल्य गीति-काव्य ग्रंथ है। श्रीमद्भागवत पुराण के द्वादश स्कंधों की कथा पर आधारित होने के बावजूद सूरसागर केवल अनुवाद नहीं, बल्कि सूरदास की मौलिक, स्वतंत्र एवं रससिक्त कल्पना की पराकाष्ठा है। इसके दशम स्कंध में श्रीकृष्ण के जन्म, बाल-लीला, गोचारण, माखन-चोरी, कालिया-दमन, रासलीला, मथुरा-गमन और भ्रमरगीत का अत्यंत विशद एवं हृदयस्पर्शी वर्णन प्राप्त होता है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित प्रति में इसमें लगभग सवा लाख पदों की परंपरा मानी जाती है, जिनमें से वर्तमान में प्रायः पाँच हज़ार से अधिक पद उपलब्ध हैं।
2. **सूरसारावली (Sur Saravali): 1107** छंदों में रचित इस ग्रंथ में संसार को ईश्वर की रंगभूमि मानकर वृहत् सृष्टि-वर्णन और कृष्ण की विविध लीलाओं का सार-संक्षेप रूप में निरूपण किया गया है। इसे सूरसागर की विषय-सूची या दार्शनिक पीठिका के रूप में भी देखा जाता है।
3. **साहित्य-लहरी (Sahitya Lahari):** यह सूरदास की काव्य-शास्त्रीय प्रतिभा का परिचायक ग्रंथ है। **118** दृष्टिकूट पदों **(Drishtikoot Padas)** के इस संग्रह में नायिका-भेद, रस, अलंकार और ध्वनि-सिद्धांतों का अत्यंत चमत्कारपूर्ण एवं बौद्धिक निरूपण मिलता है। यह सिद्ध करता है कि सूरदास केवल भावुक भक्त ही नहीं, बल्कि काव्य-शास्त्र के गहन पारखी आचार्य भी थे।

3. वात्सल्य रस के अप्रतिम सम्राट: बाल-मनोविज्ञान का अमर आख्यान

हिंदी साहित्य में सूरदास का सर्वाधिक मौलिक, अद्वितीय और युगांतरकारी अवदान 'वात्सल्य रस' की प्रतिष्ठापना है। संस्कृत काव्यशास्त्र में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से लेकर मम्मट और विश्वनाथ तक वात्सल्य को मुख्य रसों में स्थान न

देकर उसे 'भाव' या श्रृंगार के उप-अंग के रूप में देखा गया था। सूरदास ने अपने पदों के माध्यम से वात्सल्य को जिस सर्वांगीण उत्कर्ष पर पहुँचाया, उसने काव्य-मर्मज्ञों को वात्सल्य को स्वतंत्र और पूर्ण रस के रूप में मान्यता देने पर विवश कर दिया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस संबंध में अपनी अमर कृति 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखा है:

> वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया, उतना किसी अन्य कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना-कोना झाँक आए हैं।
>
> — आचार्य रामचंद्र शुक्ल

3.1 बाल-लीला एवं बाल-सुलभ चेष्टाओं का अंकन

सूरदास ने बाल-कृष्ण के जन्म से लेकर उनके घुटनों के बल चलने, प्रथम दाँत निकलने, तुतलाकर बोलने, माखन-चोरी करने और हठ करने की प्रत्येक सूक्ष्म अवस्था का अद्भुत मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। जब कन्हैया घुटनों के बल मणियों से जड़े नंद के आँगन में चलते हैं और अपनी ही परछाईं को पकड़ने दौड़ते हैं, तो सूर का वर्णन जीवंत चित्रपट प्रस्तुत करता है:

> किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
>
> मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिंब पकरिबै धावत॥
>
> कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौं, कर सौं पकरन चाहत।
>
> किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत॥
>
> — सूरसागर — बाल लीला

3.2 माखन-चोरी और बाल-हठ का मनोविज्ञान

बालक कृष्ण का माखन चुराना केवल भौतिक भूख नहीं, बल्कि गोकुल के समस्त गोप-गोपियों को अपने प्रेम-पाश में बाँधने की दिव्य क्रीड़ा है। जब यशोदा मैया माखन से सने मुख वाले कृष्ण को रंगे हाथों पकड़ती हैं, तो कन्हैया का सफाई देना और निर्दोष बनने का प्रयास बाल-मनोविज्ञान का शिखर है:

> मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।
>
> भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
>
> चार पहर बंसीबट भटकों, साँझ परे घर आयो
>
> मैं बालक बहियन कौ छोटो, छीको किस बिधि पायो?
>
> ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो॥
>
> — सूरसागर — माखन लीला

3.3 माता यशोदा का ममत्व और वियोग का वात्सल्य

सूरदास का वात्सल्य केवल संयोग तक सीमित नहीं है, अपितु वियोग में उसकी करुणा और अधिक घनीभूत हो उठती है। जब कृष्ण मथुरा चले जाते हैं, तो यशोदा की जो विह्वलता है, वह विश्व के किसी भी मातृहृदय की शाश्वत पीड़ा बन जाती है। देवकी को भेजे गए संदेश में यशोदा का बड़प्पन और मातृ-हृदय की निर्मलता साकार हो उठती है:

> संदेसो देवकी सौं कहियो।
>
> हौं तौ धाय तिहारे सुत की, मया करत ही रहियो॥
>
> जदपि टेव तुम जानति उनकी, तऊ मोहि कहि आवै।
>
> प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतैं, माखन-रोटी भावै॥
>
> — सूरसागर — यशोदा संदेश

4. **शृंगार रस का विस्तृत फलक: संयोग और वियोग**

सूरदास के काव्य का दूसरा महान स्तंभ 'शृंगार रस' है। रीतिकाल के कवियों के समान सूरदास का शृंगार वासना-जनित, कृत्रिम या विलासी नहीं है; अपितु वह लोक-संस्कृति, प्रकृति और अलौकिक प्रेम की त्रिवेणी से आप्लावित है।

- **संयोग शृंगार** (Sanyog Sringara): राधा और कृष्ण की प्रथम भेंट का दृश्य ब्रज की अमराइयों में सहज आकर्षण और संकोच का अपूर्व उदाहरण है। कृष्ण पूछते हैं—'बूझत स्याम कौन तू गोरी? कहाँ रहति काकी है बेटी, देखी नहीं कहुँ ब्रजखोरी?' इस पर राधा का चतुर प्रत्युत्तर—'काहे कौं हम ब्रजतन आवतिं, खेलति रहहिं आपनी पौरी।' सूरदास ने किशोर-मन के इस प्रथम अनुराग और रासलीला के सामूहिक उल्लास को आध्यात्मिक आनंद (**Divine Ecstasy**) का रूप दिया है।
- **वियोग शृंगार** (Viyog Sringara): कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद ब्रजभूमि और गोपियों का विरह-वर्णन अत्यंत कारुणिक है। प्रकृति, जो संयोग काल में सुखदायिनी थी, वियोग में संतापकारी बन जाती है। आँखों से निरंतर बहते आँसू वर्षा ऋतु का सादृश्य उपस्थित करते हैं:

> निसिदिन बरसत नैन हमारे।
>
> सदा रहति पावस रितु हम पै, जब तें स्याम सिधारे॥
>
> अंजन न रहत अँटक दृग-जल, कपोल भए कारे।
>
> कंचुकी-पट सूखत नहिं कबहुँ, उर बिच बहत पनारे॥
>
> — सूरसागर — विरह वर्णन

5. '**भ्रमरगीत' परंपरा: सगुण-भक्ति की दार्शनिक प्रतिष्ठा एवं उपालंभ-काव्य**

हिंदी साहित्य में सूरदास का सर्वाधिक बौद्धिक, दार्शनिक एवं व्यंग्य-प्रधान अवदान उनका 'भ्रमरगीत' प्रसंग है। भागवत के दशम स्कंध के **46**वें-**47**वें अध्याय में वर्णित संक्षिप्त आख्यान को सूरदास ने सहस्रों पदों के एक विस्तृत, सजीव और नाटकीय संवाद-काव्य में रूपांतरित कर दिया।

5.1 ज्ञान और योग पर प्रेम और भक्ति की विजय

श्रीकृष्ण मथुरा से अपने परम ज्ञानी मित्र उद्धव को ब्रज भेजते हैं ताकि वे विरह-व्याकुल गोपियों को निराकार ब्रह्म, योग, समाधि और ज्ञानोपदेश देकर शांत कर सकें। उद्धव ज्ञान के प्रकांड पंडित और अद्वैतवादी वेदांती हैं। किंतु ब्रज की अल्हड़, अशिक्षित गोपियाँ अपने एकनिष्ठ, अनन्य और सहज प्रेम के तर्क से उद्धव के जटिल दर्शन को परास्त कर देती हैं। जब एक भौंरा (भ्रमर) उड़ता हुआ आता है, तो गोपियाँ उस भौंरे को माध्यम बनाकर उद्धव पर तीखे उपालंभ (व्यंग्य) करती हैं:

> ऊधो, मन न भए दस-बीस।
>
> एक हुतौ सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस?॥
>
> इंद्री सिथिल भई सब माधव बिनु, जथा देह बिनु सीस।
>
> स्वासा अटकि रही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस॥
>
> — सूरसागर — भ्रमरगीत सार

5.2 निर्गुण का तार्किक एवं व्यावहारिक खंडन

गोपियाँ शुष्क ज्ञानमार्गी दर्शन से प्रश्न पूछती हैं कि जिस निर्गुण ब्रह्म की उपासना का वे उपदेश दे रहे हैं, उसका परिचय क्या है? उसके माता-पिता कौन हैं? उसका वर्ण कैसा है? सूरदास ने लोक-चेतना की सरलता से दार्शनिक अमूर्तता को निरुत्तरित कर दिया:

> निरगुन कौन देस कौ बासी?
>
> मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच, न हाँसी॥
>
> को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी?
>
> कैसो बरन, भेस है कैसो, केहि रस मैं अभिलाषी?॥
>
> — सूरसागर — भ्रमरगीत सार

इस संवाद का परिणाम यह होता है कि महाज्ञानी उद्धव, जो गोपियों को ज्ञान सिखाने आए थे, स्वयं प्रेम-भक्ति के रंग में रंग जाते हैं और ब्रज की धूलि को माथे से लगाकर लौटने पर विवश होते हैं। इस प्रकार सूरदास ने शुष्क ज्ञान और हठयोग के स्थान पर सगुण, सरस और मानवीय भक्ति को सर्वोपरि सिद्ध किया।

6. ब्रजभाषा का साहित्यिक उत्कर्ष एवं संगीत-साधना

सूरदास से पूर्व ब्रजभाषा मुख्य रूप से एक लोकबोली (**Dialect**) थी, जिसमें लोकगीत और लोक-कथाएँ प्रचलित थीं। सूरदास वह भगीरथ हैं जिन्होंने ब्रजभाषा को लोक-आँगन से उठाकर राजदरबारों और विद्वत्-मंडलों की शीर्ष साहित्यिक भाषा (**Literary Language**) के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। सूरदास के भाषा-कौशल की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

सारणी **1:** महाकवि सूरदास के काव्य-शिल्प एवं सौंदर्यशास्त्रीय आयामों का विश्लेषण

काव्यगत आयाम (**Dimension**)	सूरदास का विशिष्ट योगदान (**Surdas's Contribution**)	साहित्यिक प्रभाव व महत्ता (**Literary Significance**)
भाषा एवं पदावली	जनबोली ब्रजभाषा को परिष्कृत, लोकोक्तियों, मुहावरों और माधुर्य गुण से युक्त कर शास्त्रीय स्तर दिया।	ब्रजभाषा आगामी **300** वर्षों तक उत्तर भारत की प्रधान काव्यभाषा बनी।
वात्सल्य रस निरूपण	शिशु-सुलभ क्रीड़ाओं, बाल-हठ, माखन-चोरी और मातृ-हृदय का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक उद्घाटन किया।	काव्यशास्त्र में वात्सल्य को स्वतंत्र और पूर्ण रस की मान्यता प्राप्त हुई।
भ्रमरगीत परंपरा	उपालंभ-काव्य (**Satirical Poetry**) के माध्यम से निर्गुण/योग पर सगुण प्रेम-भक्ति की विजय सिद्ध की।	हिंदी साहित्य में उपालंभ एवं व्यंग्यपरक दार्शनिक काव्यधारा का बीजारोपण।

गीति-काव्य एवं संगीत	प्रत्येक पद राग-रागिनियों (बिलावल, सारंग, धनाश्री, केदारा) में निबद्ध; नाद-सौंदर्य की पराकाष्ठा।	हवेली संगीत और शास्त्रीय ध्रुपद-कीर्तन परंपरा का संवर्धन।
लोक-संस्कृति का अंकन	गोचारण, दानलीला, पनघट, फाग, होली, दही-मंथन आदि ब्रज के लोक-जीवन का सजीव आलेख।	सामंती युग में जनसाधारण की श्रमजीवी संस्कृति और लोक-रंग की पुनर्प्रतिष्ठा।

7. **आलोचनात्मक मूल्यांकन: विद्वानों की दृष्टि में सूरदास**

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने सूरदास के काव्य-सौंदर्य और साहित्यिक अवदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भक्तिकाल के कवियों की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए एक प्रसिद्ध पारंपरिक दोहा शताब्दियों से हिंदी जगत में गूँज रहा है:

> सूर-सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास।
>
> अब के कबि खद्योत सम, जहँ-तहँ करत प्रकास॥
>
> — पारंपरिक उक्ति

अर्थात्, हिंदी काव्य-गगन में सूरदास प्रत्यक्ष सूर्य के समान हैं, तुलसीदास चंद्रमा के समान हैं, केशवदास नक्षत्रों के समान हैं और अन्य कवि जुगनुओं के समान यत्र-तत्र अल्प प्रकाश करते हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'सूर-साहित्य' में सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल्यांकन करते हुए लिखा है: "सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं, तो मानो अलंकार-शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है। संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है।"

वहीं डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में: "सूरदास का सूरसागर भावों का वह अगाध महासमुद्र है जिसमें बाल-हृदय, मातृ-हृदय और प्रेमिका-हृदय की समस्त लहरें एक साथ अठखेलियाँ करती दिखाई देती हैं।"

8. निष्कर्ष (Conclusion)

उपर्युक्त समग्र विश्लेषण से यह निसंदेह स्पष्ट होता है कि महाकवि सूरदास का हिंदी साहित्य में योगदान केवल एक कालखंड विशेष तक सीमित नहीं है, अपितु वह सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। जब उत्तर भारत का समाज मुग़ल कालीन राजनीतिक दबावों और निराशा के अंधकार से घिरा था, तब सूरदास ने श्रीकृष्ण के आनंदमय स्वरूप की प्रतिष्ठा कर लोक-मानस में जीवन के प्रति अगाध जिजीविषा, उल्लास और आशा का संचार किया।

उन्होंने वात्सल्य रस को जो गरिमा प्रदान की, वह विश्व के किसी भी साहित्य में दुर्लभ है। उन्होंने शृंगार को वासना से मुक्त कर प्रेम की उदात्त मानवीय पीठिका पर प्रतिष्ठित किया। 'भ्रमरगीत' के माध्यम से उन्होंने शुष्क, निरपेक्ष और अमूर्त ज्ञानवाद के समक्ष सहृदयता, मानवीय संवेदना और प्रेमानुभूति की शाश्वत विजय प्रमाणित की। भाषा के स्तर पर, उन्होंने जनसाधारण की ब्रजबोली को जो माधुर्य, लचीलापन और संगीतबद्धता प्रदान की, उसी की नींव पर आगामी रीतिकाल और भारतेंदु युग तक ब्रजभाषा की भव्य प्रासाद-रचना संभव हो सकी। संक्षेप में, सूरदास हिंदी साहित्य के वह देदीप्यमान सूर्य हैं जिनकी काव्य-रश्मियों से हिंदी भाषा, संस्कृति और भारतीय जन-मन सदैव आलोकित रहेगा।

9. संदर्भ ग्रंथ सूची (References & Bibliography)

- शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास*. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, **1929.**
- द्विवेदी, आचार्य हजारीप्रसाद. **सूर-साहित्य*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, **1973.**
- चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम. **उत्तरी भारत की संत-परंपरा*. लीडर प्रेस, इलाहाबाद, **1951.**
- वर्मा, डॉ. रामकुमार. *हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास*. साहित्य भवन, प्रयागराज, **1958.**
- दीनदयाल गुप्त. *अष्टछाप और वल्लभ-संप्रदाय*. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, **1950.**
- वाजपेयी, नंददुलारे. *महाकवि सूरदास*. आत्माराम एंड संस, दिल्ली, **1953.**
- शर्मा, डॉ. मुंशीराम. *सूर-सौरभ*. भारत प्रकाशन, अलीगढ़, **1960.**
- Hawley, John Stratton. *Surdas: Poet, Singer, Saint*. University of Washington Press, Seattle, **1984**.
- McGregor, R.S. *Hindi Literature from Its Beginnings to the Nineteenth Century*. Otto Harrassowitz, Wiesbaden, **1984**.